परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके ओजस्वी विचार

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

अध्याय १. हिन्दू समाजके सन्दर्भमें विचार १२

१. हिन्दू धर्मियोंका दिशादर्शन १२

२. हिन्दू धर्मियोंके अनुचित विचारोंका खण्डन १७

* सर्वधर्मसमभाव * जात्यन्धता * बुद्धिवाद १९

३. हिन्दू संगठनोंका कर्तव्यपालनके सम्बन्धमें मार्गदर्शन २१

अध्याय २. राष्ट्रके सन्दर्भमें विचार २३

१. पर्यावरण एवं प्रदूषण २३

२. शिक्षा २५

३. स्वभाषाभिमान २६

* अभिभावको, बच्चोंको मातृभाषामें पढाएं ! २६

४. आरक्षण २८

५. भ्रष्टाचार २९

६. नक्सलवाद ३०

७. आतंकवाद ३१

८. पुलिसतंत्र ३२

९. प्रशासन ३४

१०. न्यायव्यवस्था, प्रचलित विधान (कानून), न्यायाधीश तथा अधिवक्ता ३५

११. प्रसारमाध्यम तथा पत्रकारिता ३८

१२. राजनीतिज्ञ ३९

१३. राजनीतिक दल ४०

१४. लोकतन्त्र ४०

* देशको रसातलमें ले जानेवाले हास्यास्पद लोकतन्त्रका मर्म ! ४१

* प्रजा सत्त्व प्रधान हो, तो ही लोकतन्त्र सफल होता है ! ४२

१५. हिन्दू राष्ट्र ४३
* हिन्दू राष्ट्र स्थापनाकी आवश्यकता ! ४३
* हिन्दू राष्ट्र स्थापनाके वैचारिक युद्धकी समय-सारणी ४४
* हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए आवश्यक बल ४४
* हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु प्रत्यक्ष सक्रिय हो ४५

अध्याय ३. हिन्दू धर्मसे सम्बन्धित विचार ४६
१. हिन्दू धर्मका महत्त्व ४६
* केवल हिन्दू धर्म अनादि होनेसे उसका अन्त नहीं होगा ! ४८
२. हिन्दू मानबिन्दुओंका रक्षण ४८
* गोरक्षाके कार्यका महत्त्व एवं मर्यादा ४८
* आध्यात्मिक लाभ देनेवाली गंगा नदी प्रदूषित न करनेका महत्त्व ! ५१
३. मन्दिर संस्कृतिका संवर्धन ५१
४. हिन्दू धर्मरक्षा हेतु यह करें ! ५५

अध्याय ४. अध्यात्मशास्त्र एवं साधना सम्बन्धी विचार ५७
१. अध्यात्मशास्त्रकी श्रेष्ठता ५७
* कहां विज्ञानकी खोज, और कहां सर्वोच्च कोटिका आध्यात्मिक शोध ! ५८
२. साधना ५९
* विविध साधनामार्ग ६0
* गुरुकृपायोगानुसार साधना ६२
* क्षात्रधर्म साधना (सत्प्रवृत्तियोंकी रक्षा तथा दुष्प्रवृत्तियोंका निर्मूलन) ६५

टिप्पणी : ग्रंथके प्रत्येक विचारके अंतमें कोष्टकमें दिनांक / वर्ष दिया गया है ।
प.पू. डॉ. आठवलेजीने संबंधित विचार उस दिन लिखे हैं ।

लेखककी भूमिका

महापुरुषोंके विचार तत्कालीन समाजको दिशा देते हैं । किंबहुना महापुरुषोंके विचारोंके अनुसार ही समाज अग्रसर होता है । ये महापुरुष यदि अध्यात्म क्षेत्रके अधिकारी, अर्थात सन्त, गुरु अथवा परात्पर गुरु हों, तो उनके विचार, धर्मग्रन्थोंके आध्यात्मिक ज्ञान समान चिरन्तन होते हैं । सनातन संस्थाके संस्थापक प.पू. डॉ. जयंत आठवलेजी परात्पर गुरु स्तरके संत हैं । उनके द्वारा संकलित अध्यात्म, साधना, आचारपालन इत्यादि विषयोंकी ग्रन्थसम्पदा अध्यात्मके अभ्यासियोंके लिए उपयुक्त, और किसी भी योगमार्गानुसार साधना करनेवालोंके लिए मार्गदर्शक है । वर्ष १९९८ से 'सनातन प्रभात' नियतकालिकोंके माध्यमसे प.पू. डॉ. आठवलेजी समाज, राष्ट्र एवं धर्म से सम्बन्धित ज्वलन्त विचार भी प्रस्तुत कर रहे हैं । इन विचारोंमें राष्ट्रोत्थान एवं धर्मसंस्थापनाके बीज हैं । ये विचार राष्ट्रप्रेमियों और धर्मप्रेमियों के लिए दिशादर्शक हैं । साथ ही ये सामान्य जन्महिन्दुओंको भी जागृत करते हैं ।

इस ग्रन्थमें चयनित विचार प्रातिनिधिक हैं । यदि उनके द्वारा लिखे गए कुल विचार देखें, तो ये हिमशिखरकी चोटी हैं । आजतक विविध क्षेत्रोंके सन्दर्भमें उनके द्वारा लिखे सम्पूर्ण विचार एकत्र करनेकी सोचें, तो प्रत्येक क्षेत्रसे सम्बन्धित स्वतन्त्र ग्रन्थ बनेगा । उनके विचार कुछ लोगोंको स्थापित तन्त्रके विरुद्ध आवाज उठानेवाले अथवा क्रान्तिकारी प्रतीत होंगे; परन्तु वे समाज, राष्ट्र, धर्म एवं संस्कृति के हितोंकी रक्षा हेतु ही हैं । इस ग्रन्थमें चयनित परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके विचार सार्वकालिक हैं तथा वर्तमान समयमें सर्वाधिक उपयुक्त हैं ।

भारतमें धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र स्थापित होने हेतु राष्ट्रप्रेमियों एवं धर्मप्रेमियों में ब्राह्मतेज (साधनाका बल) और क्षात्रतेज वृद्धिंगत होना अत्यावश्यक है । इस दृष्टिसे इस ग्रन्थमें दिए परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके ब्राह्मतेज तथा क्षात्रतेज युक्त विचार प्रेरणादायी सिद्ध होंगे । इन विचारोंसे स्फूर्ति लेकर प्रत्येक हिन्दू धार्मिकदृष्टिसे जागृत हो और धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु सक्रिय हो, यही ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**